The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 6 | June 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

भारत में स्ट्रीट चिल्ड्रन का शिक्षा से वंचन : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

कविता

पीएच॰डी॰ शोधार्थिनी, समाज विज्ञान संस्थान, डॉ॰ भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा

ckavita013@gmail.com

प्रो॰ मौ॰ अरशद

विभागाध्यक्ष एवं निर्देशक, समाज विज्ञान संस्थान, डॉ॰ भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15861560

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 25-06-2025

Published: 10-07-2025

Keywords:

समृद्धि, शोषण, स्वतंत्रता, स्ट्रीट चिल्ड्रन, आश्रित

ABSTRACT

शिक्षा जीवन का मर्म है। यदि व्यक्ति शिक्षित है तो वह स्वतः ही ऐसे रास्तों का चुनाव कर लेगा, जो उसके जीवन की कठिनाइयों को कम कर उसे समृद्धि प्रदान करें और वह अपने अधिकारों के प्रति भी जागरूक रहेगा कि कहीं उसके साथ किसी प्रकार का शोषण तो नहीं हो रहा। इसलिये तो शिक्षा जीवन पर्यन्त मनुष्य के लिए कभी प्रत्यक्ष तो कभी अप्रत्यक्ष रूप में उल्लेखनीय भूमिका अदा करती है। परन्तु हमारे देश में स्वतंत्रता प्राप्ति के दशकों पश्चात् स्ट्रीट चिल्ड्रन की शिक्षा आज भी विपन्नता ग्रहण किए हुए है। लेकिन स्ट्रीट चिल्ड्रन का अशिक्षत होना मात्र उनके जीवन में समस्या उत्पन्न नहीं करता बल्कि यह उस राष्ट्र के भविष्य को भी चुनौती पूर्ण बना देता है चूँकि किसी भी राष्ट्र का आने वाला कल उसकी भावी पीढ़ी पर आश्रित होता है फिर भी स्ट्रीट चिल्ड्रन की शिक्षा आज भी निष्क्रिय बनी हुई है जिसे जमीनी स्तर पर सक्रिय करना एक चुनौती है सरकार के अनेकों प्रयत्न कभी धन एवं संसाधनों की असफलता के कारण विफल हो जाते है तो कभी अन्य कारणों से स्ट्रीट चिल्ड्रन को लाभान्वित ही नहीं कर पाते। हालांकि इनकी शिक्षा के क्षेत्र में गैर सरकारी संगठनों का योगदान सराहनीय है। इस पेपर में द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग कर, स्ट्रीट चिल्ड्रन की शिक्षा का विश्लेषणात्मक अध्ययन समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण द्वारा किया गया है।

परिचय

बचपन एक ऐसा शब्द जिसे हर कोई जीना चाहता है जिसमें जिन्दगी की समस्याओं से परे का जीवन नजर आता है लेकिन ऐसे भी न जाने कितने बच्चे हैं जो बचपन को जी ही नहीं पाते और बचपन में ही जिम्मेदारियों के बोझ तले दब जाते हैं और जीवन पर्यन्त इसी बोझ को कंधों पर लिए जीवन जीते हैं इसी तबके को अक्सर हम स्ट्रीट चिल्ड्रन कहकर पुकारते हैं यह वह वर्ग है जो समाज में बच्चों को प्राप्त प्रत्येक सुविधा से वंचित नजर आता है समाज द्वारा अक्सर इन्हें अनदेखा कर दिया जाता है या उनके साथ सामाजिक, आर्थिक, मानसिक एवं अन्य प्रकार से दुर्व्यवहार किया जाता है यह समस्या केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के लगभग सभी देशों में व्याप्त है फिर चाहे वह विकसित हों या विकासशील। सिर्फ उनका स्वरूप बदल जाता है "भारत में 2011 की जनगणना के अनुसार 1.77 मिलियन लोग बेघर हैं" (सत्यार्थी फाउण्डेशन 2021) जिनमें अक्सर इन बच्चों के परिवार शामिल हैं एवं 92.95 मिलियन आन्तरिक बाल प्रवासी जोकि लगभग 455.78 मिलियन प्रवासियों में हर एक पाँचवें प्रवासी में से एक हैं लोग अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए गाँव से शहर एवं एक शहर से दूसरे शहर संघर्ष करते हैं इन्हीं समस्याओं में उन बच्चों का जीवन संघर्षमय व्यतीत होता है। "सेव द् चिल्ड्रन की रिपोर्ट के अनुसार, लखनऊ (10,771), मुघलसराय (1399), हैदराबाद (28560), पटना (21926), एवं कोलकाता (21907) की संख्या में स्ट्रीट चिल्ड्रन को साक्ष्य किया गया।"(मारिया, 2019)

स्ट्रीट चिल्ड्रन अक्सर हमें शहरों में देखने को मिलते हैं जो सड़कों को ही अपना निवास स्थान बनाए हुए हैं ये बच्चें सड़कों पर सामान बेचते, भीख मांगते या कूड़ा बीनते हुए दिखते हैं जो बिना किसी सहायता के सड़कों पर अपना जीवन व्यतीत करने के लिए मजबूर हैं अक्सर, "इस स्थिति में बच्चे जनता और प्राधिकारियों की ओर से 'किशोर अपराधी' जैसी रूढ़बद्ध धारणा के शिकार होते हैं।" (मारिया 2019) जो अक्सर अनेक प्रकार के शोषण और दुर्व्यवहार के भी शिकार होते हैं जोकि इनके साथी समूहों, पुलिस या अन्य लोंगों द्वारा किया जाता है।

इस समस्या के कई कारण हैं जैसे– पूर्ण गरीबी, बिखरे हुए परिवार, घरेलू हिंसा, विस्थापन, या गाँव से शहरों के लिए प्रवास आदि इसमें पूर्ण सहयोग प्रदान करते हैं जिसके कारण बच्चे स्ट्रीट चिल्ड्रन बनने पर मजबूर होते हैं कभी–कभी शहर देखने की इच्छा, शिक्षा में कठिनाई इत्यादि भी इसका कारण हो सकता है। "माता – पिता द्वारा उन पर ध्यान न देना, गरीबी, रिश्तेदारों/ पड़ौसियों से शारीरिक और यौन शोषण एवं दमनकारी घरेलू माहौल, कक्षा में उनके प्रदर्शन के मामले में माता –पिता की बच्चों से बहुत असमान अपेक्षाएं और मूल्यांकन, जिन्हें पूरा करना बच्चे के लिये मुश्किल होता है तब वे हताश हो जाते है और परिणामस्वरूप घर छोड़ने का फैसला करते हैं ऐसा लगता है कि भारतीय सन्दर्भ में, माता–पिता की लापरवाही एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।" (राय एवं शेखर, 2023)

परिभाषा

"स्ट्रीट चाइल्ड शब्द 1994 में मानवाधिकार आयोग द्वारा प्रयुक्त किया गया जो 1980 के दशक में विकसित हुआ जिसके अनुसार कोई भी लड़की या लड़का जिसके लिये सड़क (व्यापक रूप से खाली आवास, बंजर भूमि आदि

सहित)उसका अभ्यस्त निवास और या आजीविका का साधन बन गया है और जिसे जिम्मेदार वयस्कों द्वारा अपर्याप्त रूप से संरक्षित, पर्यवेक्षित एवं निर्देशित किया जाता है।" (एसओपी 2.0)

एक अन्य वर्गीकरण के अनुसार स्ट्रीट चिल्ड्रन को निम्न श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है –"चिल्ड्रन ऑन द् स्ट्रीट एवं चिल्ड्रन ऑफ द् स्ट्रीट। चिल्ड्रन ऑन द् स्ट्रीट – बच्चे जो सड़कों पर कार्य करते हैं और रात को अपने घर चले जाते हैं एवं चिल्ड्रन ऑफ द् स्ट्रीट– ऐसे बच्चे जो बिना अपने परिवार की सहायता के सड़कों पर कार्य करते एवं रहते हैं, लेकिन उनसे सम्बन्ध रखते हैं या फिर ऐसे बच्चे जो किसी की सहायता के बिन ही अपने बल पर सड़कों पर हैं।"(एसओपी 2.0)

साहित्य समीक्षा

दत्ता,एन. (2018) स्ट्रीट चिल्ड्रन इन इंडिया : ए स्टडी ऑन देअर एक्सेस टू हैल्थ एण्ड ऐजूकेशन , में उनका निष्कर्ष है कि बच्चों के स्ट्रीट चिल्ड्रन बनने में सबसे अहम 'गरीबी' है और अधिकतर बच्चे अपने माता–पिता के साथ रहते हैं और कुछ सुरक्षा प्राप्त करते हैं फिर भी वे प्रत्येक दिन कुछ कठिनाइयों एवं चुनौतियों का सामना करते हैं।

मारिया,ए. (2019) अन्डरस्टैडिंग द् एजूकेशनल फ्रेमवर्क्स फॉर स्ट्रीट चिल्ड्रन इन इंडिया, यह अध्ययन उन सभी शिक्षा नीतियां, जो भारत में आजादी के बाद बनीं, की समीक्षा पर आधारित है जो कहता है – आयोग की रिपोर्ट पर बनी नीतियों ने इस क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव तो किये हैं, किन्तु सामाजिक अथवा राजनीतिक दबावों, राजीतिक चूक, धन की कमी और कभी– कभी सजगता के न होने पर नीतियों की सिफारिश और उनके कार्यान्वयन के मध्य अन्तराल हो जाते हैं जिससे नीतियां पूरी तरह प्रभावी नहीं हो पाती हैं समाज ने सदैव ऐसे मुद्दों को सुदृढ़ता प्रदान की जो राज्य द्वारा अपेक्षित होते है, ताकि अन्तरालों को भरा जा सके। क्योंकि स्ट्रीट चिल्ड्रन को समाज में सामान्य बनाने के लिए एक प्रभावी तरीका शिक्षा हो सकती है आज के समय भी बनीं शिक्षा नीतियां ऐसे बच्चों को शत–प्रतिशत लक्षित नहीं कर पा रही हैं।

राय,पी. एवं शेखर,सी. (2023) स्टेटस ऑफ ऐजूकेशन ऑफ स्ट्रीट चिल्ड्रन ऑफ इंडिया : ए स्टडी ,में स्ट्रीट चिल्ड्रन की शिक्षा को अच्छी स्थिति में नहीं पाया है चिल्ड्रन ऑन द् स्ट्रीट एवं चिल्ड्रन ऑफ द् स्ट्रीट दोनों की संख्या बढ़ती जा रही है जिसके अनेकों कारण हैं लेकिन महत्वपूर्ण कारण सामाजिक– आर्थिक घटना गरीब और अमीर के मध्य विकासशील असमानता है दूसरे कारण गरीबी और वंचन हो सकते हैं जो न केवल स्ट्रीट चिल्ड्रन को उनके मूलभूत अधिकारों जैसे– शिक्षा और खुशहाल बचपन से दूर करते हैं बल्कि उनके भविष्य की संभावनाओं को भी प्रभावित करते नजर आते हैं।

अध्ययन का उद्देष्य

स्ट्रीट चिल्ड्रन की शैक्षिक प्रस्थिति का अध्ययन करना।

अध्ययन पद्धति

यह अध्ययन द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है जिसके लिए शोध पत्र, सरकारी एवं गैर–सरकारी संगठनों की रिपोर्ट, वेबसाइट्स का प्रयोग किया है। आंकड़ों के माध्यम से स्ट्रीट चिल्ड्रन की शिक्षा में आने वाली कठिनाइयों के कारणों एवं इससे उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को विश्लेषण के माध्यम से ज्ञात किया गया है।

शिक्षा से वंचन

जिस प्रकार एक मकान की मजबूती का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा उसकी नींव होती है उसी प्रकार शिक्षा भी प्रत्येक मनुष्य के जीवन का आधार वाक्य है यह सुदृढ़ एवं अच्छे जीवन को बुनियाद प्रदान करती है वर्तमान में तो व्यक्ति के जीवन को आकार देने के लिए शिक्षा प्राथमिक कारक बनी हुई है वहीं दूसरी ओर बच्चों का एक ऐसा तबका भी है, जो प्राथमिक शिक्षा भी पूर्ण नहीं कर पाता या स्कूल में कभी नामांकित ही नहीं होता। अक्सर ये बच्चे शिक्षा से मीलों दूर ही रह जाया करते हैं और शिक्षा के बदले अपने परिवार की आर्थिक सहायता के लिए सड़कों पर कार्य करना चुनते हैं ये कभी अपनी इच्छा से या पारिवारिक दबाव से भी ऐसा करते हैं। कैलाश सत्यार्थी संगठन द्वारा दिल्ली स्ट्रीट चिल्ड्रन पर किए गए सर्वेक्षण में केवल 29 प्रतिशत बच्चे ऐसे थे जो कभी स्कूल गए एवं स्कूल जाने वाले 138 बच्चों में से 75 प्रतिशत ने कोविड–19 के प्रकोप के कारण स्कूल छोड़ दिया। (स्ट्रीट चिल्ड्रन इन एनसीटी ऑफ दिल्ली ए रेपिड असिसमेंट 2021) यदि किसी देश के राजधानी शहर में इन बच्चों की शिक्षा इस प्रकार की है तो सम्भवतः अन्य शहरों में भी अन्तर लेशमात्र ही होगा। परन्तु स्ट्रीट चिल्ड्रन अशिक्षित हैं तो यह ऐसे अनेकों कानूनों का उल्लंघन है जो मनुष्य होने के नाते सभी को प्राप्त हैं।

कारण

संघर्ष जीवन का नियम है प्रत्येक व्यक्ति को इसके द्वार से गुजरना ही पड़ता है परन्तु स्ट्रीट चिल्ड्रन का तो पूरा जीवन ही संघर्षमय नजर आता है इनके अशिक्षित होने में कोई एक कारण जिम्मेदार नहीं बल्कि अनेकों ऐसे सामाजिक एवं आर्थिक कारण हैं जो इनकी क्षिक्षा में मुसीबतें पैदा करतें हैं, जैसे–

मंहगी शिक्षा व्यवस्था – स्ट्रीट चिल्ड्रन शहरी क्षेत्रों की समस्या है और ये अधिकांशतः मलिन बस्तियों में निवास करते हैं जहाँ से स्कूल की दूरी लगभग ज्यादा होने पर परिवार परिवहन का खर्च वहन नहीं कर पाता एवं महंगी किताबें, ट्यूशन फीस, एवं स्कूल फीस उनकी शिक्षा में रूकावट पैदा करते हैं।

अध्यापकों एवं अन्य साथी समूहों द्वारा दुर्व्यवहार किया जाना– ऐसे बच्चे जिनका परिवार गरीबी का जीवन व्यतीत कर रहा है उनकी जीवनशैली अन्य बच्चों से अलग होने पर अक्सर वे विद्यालय में अध्यापकों एवं अन्य बच्चों द्वारा दुर्व्यवहार का शिकार भी नजर आते हैं। जिससे हताश होकर अक्सर वे विद्यालय छोड़ने पर मजबूर होते हैं।

शिक्षा में कठिनाई– कुछ बच्चे जिनकी पढ़ाई में रूचि नहीं या अध्यापक द्वारा पढ़ाया हुआ समझने में कठिनाई होती है और वे अक्सर विद्यालय नहीं जाना चाहते सिर्फ माता– पिता द्वारा जबरन दबाव डालने पर स्कूल जाते हैं ये बच्चे अवसर मिलते ही स्कूल छोड़ देते हैं।

अशिक्षित माता – पिता और शिक्षा से अधिक सड़कों पर काम को महत्व देना– ऐसे बच्चे जिनके माता– पिता अशिक्षित हैं एवं ऐसे पर्यावरण में रहते हैं जहाँ शिक्षा अनावश्यक समझी जाती है, ऐसे में अशिक्षा का दुष्चक्र चलता रहता है शिक्षा न मिलने से इन बच्चों का भविष्य भी खतरे में रहता है और आने वाली पीढ़ियों का जीवन भी। कभी– कभी मजबूरी में गरीबी या अन्य कारणों से माता पिता अपने बच्चों को स्कूल भेजने से अधिक महत्व सड़कों पर कार्य करने को देते हैं।

सामाजिक – आर्थिक कारण– कभी– कभी जातिगत भेदभाव भी इसका कारण हो सकता है एवं कई बच्चों के माता– पिता बचपन में ही गुजर जाते हैं तब वे परिवार में अकेले पेट भरने का एकमात्र सहारा हो। ऐसे बच्चों को अपनी शिक्षा छोड़ अपने परिवार का लालन–पालन करना जरूरी हो जाता है।

प्रभाव

ऐसा प्रतीत होता है मानो वर्तमान दौर शिक्षा का है क्योंकि शिक्षित व्यक्ति नवीनतम आविष्कारों में जुटे हुए हैं एवं प्रत्येक दिन कुछ नया कर असंभव कार्य को भी संभव बना रहे हैं शायद इन्हीं समस्त कारणों से शिक्षा आज आधारभूत स्तम्भ बनकर उभरी है। जैसे शिक्षा के अभाव में व्यक्ति का जीवन उस अंधकारमय स्थान के समान है जहाँ दुनियाभर का खजाना तो है परन्तु उजाले के अभाव में उसे उपयोग में ला पाना असंभव है जों बच्चे शिक्षा से लाभान्वित ही नहीं हो पाते, वे अक्सर अपने भविष्य के लिए उचित मार्ग नहीं खोज पाते और जिन परिस्थितियों में उनका परिवार जीवन व्यतीत कर रहा है वे भी उसी में उलझ कर रह जाते हैं। एवं ऐसे श्रमिक बन जाते हैं जो कार्य तो पूरा दिन करते हैं लेकिन कोई विशेष प्रकार का कौशल न होने से केवल उतना ही पारिश्रमिक प्राप्त करते हैं जिससे मात्र परिवार का गुजारा हो पाता है और कभी– कभी उतना भी नहीं। शिक्षा की अविद्यमानता में वे अपने सामाजिक और संवैधानिक अधिकरों से अनजान रहते हैं। ऐसे में वे शोषण एवं दुर्व्यवहार का शिकार भी नजर आते हैं। ऐसे बच्चे एवं उनके परिवार सरकार द्वारा उनको दी जाने वाली सुविधाओं से भी वंचित रह जाते हैं। एवं गरीबी के उसी दुष्चक्र में जीवन व्यतीत करते रहते हैं।

सरकारी एवं गैर– सरकारी संगठनों द्वारा पहल एवं संवैधानिक प्रावधान

वैश्विक एवं राष्ट्रीय दोनों ही स्तरों पर ऐसे बच्चों के लिए अनेकों प्रयत्न किये गये है एवं किए जा रहे हैं जो मुश्किल एवं कठिन परिस्थितियों में अपना जीवन व्यतीत करते हैं यूनीसेफ एक वैश्विक संगठन है जो स्ट्रीट चिल्ड्रन को चिन्हित करता है एवं अनेकों आधारों पर उनके संरक्षण के लिए भी प्रावधान करता है

सरकार द्वारा समय– समय पर शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिये अभी तक अनेकों आयोग गठित किये हैं एवं उनकी रिपोर्टों पर विचार कर आवश्यकतानुसार शैक्षिक नीतियों में सुधार किया गया है 2002 में भारतीय संविधान में 86 वां संशोधन के द्वारा अनुच्छेद 21अ जोड़ा गया जो निर्धारित करता है कि प्रत्येक 6–14 आयु के किसी भी वर्ग के बच्चे को राज्य बिना किसी शुल्क के शिक्षा प्रदान करे।

मिशन वात्सल्य योजना एक केन्द्र प्रायोजित योजना जो बाल संरक्षण सेवा (सीपीएस) मंत्रालय द्वारा कार्यान्वित है इसमें स्ट्रीट चिल्ड्रन का पुनर्वास भी शामिल है जिसमें आयु उपयुक्त शिक्षा, मनोरंजन, व्यावसायिक प्रशिक्षण तक पहुँच, स्वास्थ्य देखभाल प्रायोजन आदि शामिल हैं।

चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 एक निशुल्क टेलीफोन सेवा है जो महिला एवं बाल कल्याण मंत्रालय के सहयोग द्वारा देश के 72 शहरों में कार्यरत है।

कैलाश सत्यार्थी गैर सरकारी संगठन जो स्ट्रीट चिल्ड्रन के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराता है एवं उनकी अनौपचारिक या औपचारिक शिक्षा के लिए भी प्रयत्नशील रहता है। यह संगठन बाल विवाह, बाल श्रम, बाल तस्करी, बाल दुर्व्यवहार आदि से उनके बचाव के हर संभव प्रयास करता है।

निष्कर्ष

हमारे देश में स्ट्रीट चिल्ड्रन की शिक्षा एक बड़ी चुनौती बनी हुई है जिसका महत्वपूर्ण कारण गरीबी एवं समाज में निहित असमानता है क्योकि ऐसे बच्चे एवं इनके परिवार को सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं से हर पल जूझना पड़ता है। और प्रत्येक दिन अपने परिवार के लिये भोजन जुटाने में ही सारी ऊर्जा लगा देते हैं। ऐसे में शिक्षा को अनदेखा करना इनकी मजबूरी बन जाती है एवं स्कूल जाने के बदले सड़कों पर कार्यरत होना प्राथमिकता। सरकार इनकी शिक्षा के लिए प्रयासरत भी है परन्तु जनसंख्या की प्रचुरता जिस मात्रा में है धन एवं संसाधन उस मात्रा में उपलब्ध न होना, समस्त प्रयासों को असफल कर देता है। नागरिकों में अज्ञानता भी सरकारी प्रयासों की असफलता में जिम्मेदार कारक की भूमिका अदा करती है। साथ ही अनेक गैर– सरकारी संगठन भी इनको शिक्षित करने में लगे हुए हैं एवं उनके शोषण एवं दुव्यर्वहार से उनको बचाने में मददगार साबित हो रहे हैं। सरकार की अपेक्षा गैर – सरकारी संगठनों का योगदान इनकी शिक्षा में महत्वपूर्ण साबित हो रहा है जो जमीनी स्तर पर कार्यरत हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

मारिया ए॰ (2019) अन्डरस्टैडिंग द् एजूकेशनल फ्रेमवर्क्स फॉर स्ट्रीट चिल्ड्रन इन इंडिया, इंटरनेशनल जरनल ऑफ रिसर्च पब्लिकेशन एण्ड रिव्यूज, 2454–2237

दत्ता,एन. (2018) स्ट्रीट चिल्ड्रन इन इंडिया : ए स्टडी ऑन देअर एक्सेस टू हैल्थ एण्ड ऐजूकेशन, इंटरनेशनल जरनल ऑफ चाइल्ड, यूथ एण्ड फैमिली स्टडीज DOI: http://dx.doi.org/10.18357/ijcyfs91201818120

राय,पी.,एवं शेखर,सी.(2025) स्ट्रीट चिल्ड्रन इन इंडिया : पौलिसी, एनालिसिस, सक्सेस, फेलियस एण्ड रिकमन्डेशन्स फॉर रिफॉर्म। इंटरनेशनल जरनल ऑफ रिसर्च पब्लिकेशन एण्ड रिव्यूज, 2582–7421, DOI : https://doi.org/10.55248/gengpi.6.0325.1196

राय,पी॰ एवं शेखर,सी॰ (2023) स्टेटस ऑफ ऐजूकेशन ऑफ स्ट्रीट चिल्ड्रन ऑफ इंडिया : ए स्टडी, जरनल ऑफ इमरजिंग टेक्नोलॉजी एण्ड इनोवेशन रिसर्च, 2349–5162

एसओपी 2.0,(2020) सेव द चिल्ड्रन